नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

12

पूजा खन्ना*
डॉ0 सीमा गुप्ता**

सारांश

प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएं क्षमताएं, रूचि, अभिरूचि, जीवन संतुष्टि आदि भिन्न–भिन्न होते हैं जो कि उनके अनेक वातवरणीय सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित होते हैं तथा किसी व्यक्ति में सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इन्हीं वातावरण, परिस्थिति, आयु, लिंग इत्यादि के कारण व्यक्ति के जीवन संतुश्टि प्रतिमानों में अन्तर की कल्पना की जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सारांश नागरिक पुलिस विभाग व पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों में जीवन संतुष्टि के स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया। जिसके लिए मुरादाबाद मण्डल के नागरिक पुलिस विभाग व पी0ए0सी0 के 200 कर्मचारियों (100 पुरूष एवं 100 महिला) का चयन अनियत विधि से किया गया। अध्ययन हेतु डा0 प्रोमिला सिंह, रायपुर द्वारा निर्मित जीवन संतुष्टि मापनी का उपयोग किया गया। परिवर्तियों के मध्य अन्तर ज्ञात करने के लिए टी0 मूल्य का उपयोग किया गया है। समस्त नागरिक पुलिस विभाग व पी0ए0सी0 कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य 6.24 ज्ञात हुआ जो कि .01 एवं .05 विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है। अतः स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग तथा पी0ए0सी0 के कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होता है। जबकि आन्तरिक समूह (महिला कर्मचारी व पुरूष कर्मचारी) के मध्य जीवन संतुष्टि के स्तर में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिचय–

जीवन सन्तुष्टि से अभिप्राय व्यक्ति के दिन प्रतिदिन की जिन्दगी में पाये जाने वाली सामान्य प्रसन्न, तनाव रहित जीवन अभिरूचि के बने रहने से है जिस प्रकार कार्य सन्तोश के द्वारा कार्यकर्ता अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति करता है उसी प्रकार जीवन सन्तुष्टि व्यक्ति में सदा ही जीवन से आनन्द

*शोधछात्रा (मनोविज्ञान), गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स महाविद्यालय, मुरादाबाद
**रीडर, मनोविज्ञान विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स महाविद्यालय, मुरादाबाद

की अनुभूति प्रदान करता है तथा व्यक्ति में जीवन के प्रति एक धनात्मक मनोवृत्ति का संचार करता रहता है।

वर्ष 1978 में स्लिन एंड जॉनसन ने जीवन सन्तुष्टि को परिभाषित करते हुए कहा था– "एक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में जीवन की गुणवत्ता उसके द्वारा चयन किये गये कार्यक्षेत्र पर आधारित होती है। जीवन सन्तुष्टि एक ऐसा कारक है जो प्रमाणित करता है कि एक व्यक्ति के जीवन का मूल्यांकन उसकी सामान्य खुशी चिन्ता से मुक्ति एवं जीवन के प्रति रूचि के आधार पर किया जा सकता है।

वर्ष 2002 में बी तलरेजा ने जीवन सन्तुष्टि पर परिवारिक वातावरण के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन को 18 से 40 वर्ष के बीच की 50 महिलाओं 25 कामकाजी व 25 ग्रहणियों पर किया गया। परिणाम स्वरूप किसी प्रकार का विशेष अन्तर नहीं पाया गया। किन्तु प्रतिशत यह दर्शाते हैं कि काम न करने वाली महिलाएं ज्यादा सन्तुष्ट है कामकाजी महिलाओं की तुलना में। यहां दो समूह के मध्य पारिवारिक पर नियन्त्रण रखने के सम्बन्ध में एक अर्थपूर्ण अन्तर देखने को मिलता है। गृहणियों की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं के घर में पारिवारिक वातावरण पर ज्यादा नियन्त्रण पाया गया।

वर्श 2012 में डा0 कुमकुम पारिक ने संयुक्त परिवार में रहने वालो की भावनात्मक बृद्धि एंव जीवन सन्तुष्टि का संहसम्बन्धनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में 398 वृद्धों का एक प्रतिदर्श लिया गया जिसमें जीवन सन्तुष्टि और भावनात्मक बुद्धि को मापने के लिए एन.सी.आर. जीवन सन्तुष्टि मापनी एवं भावनात्मक बुद्धि मापनी का स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा प्रयोग किया गया। त समूह दोनों के बीच सहसम्बन्ध और CR विश्लेषण के लिए अभिकलन किया गया तथा परिणाम स्वरूप ज्ञात हुआ कि दोनों समूह के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है।

<u>उद्देश्य–</u>

1. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन सन्तुष्टि का स्तर ज्ञात करना।
2. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष एवं महिलाओं कर्मचारियों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

<u>परिकल्पना–</u>

1. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों के जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा।
2. नागरिक पुलिस विभाग के पुरूष एवं महिला कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा।
3. पी0ए0सी0 के पुरूष एवं महिला कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा।
4. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 के पुरूष कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा।
5. नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 के महिला कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा।

प्रतिदर्श–

अध्ययन हेतु मुरादाबाद मण्डल के नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत 200 कर्मचारियों का चयन अनियत विधि से किया गया जिसमें दोनों वर्ग के 100 महिला एवं 100 पुरूष कर्मचारी लिए गए है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु डा0 प्रोमिला सिंह द्वारा निर्मित जीवन सन्तुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें 35 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न व्यक्ति के जीवन सन्तुष्टि से सम्बन्धित हैं।

परीक्षण की विश्वसनियता परीक्षण पुनः परीक्षण द्वारा आंकी गयी है जो कि 0.91 आयी। इसकी वैधता को जांचने के लिए आलम एवं सिंह 1971 व वर्तमान मापनी के बीच सहसम्बन्ध गुणांक का अभिकलन किया गया जिसके आधार पर इस मापनी का सहसम्बन्ध गुणांक 0.83 आया।

नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 के कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि मापनी से प्राप्त माध्य, मानक विचलन तथा टी–मूल्य का प्रर्दशन

तालिका सं0–1

क्र0 सं0	नाम	नागरिक पुलिस विभाग			पी0ए0सी0					.01 एवं .05 विश्वास स्तर
		सं0	मध्यमान	मानक विचलन	सं0	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी मूल्य	
1	कुल कर्मचारी	100	286	36.35	100	301	30.88	2.38	6.24	सार्थक अन्तर है
2	पुरूश कर्मचारी	50	144	17.12	50	149	15.22	3.27	1.53	सार्थक अन्तर नहीं है
3	महिला कर्मचारी	50	142	19.39	50	152	15.66	3.55	2.81	सार्थक अन्तर है

परिणाम– शोध परिणाम तालिका सं0 1 में प्रदर्शित किये गये हैं

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग का मध्यमान 286 तथा पी0ए0सी0 का मध्यमान 301 है।

अतः मध्यमान के आधार पर नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों में जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की पाई गई।

तालिका सं0 1 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि समस्त नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य 6.24 ज्ञात हुआ जो कि .01 एवं .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है। अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना सं0 1 नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा स्वीकृत की जाती है।

परिणाम में यह भी स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य 1.53 ज्ञात हुआ अतः .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता। नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा परिकल्पना अस्वीकृत होती है। तालिका सं0 1 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि समस्त नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत महिला कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य 2.81 है जो कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है। अतः परिकल्पना सं0 5 कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत महिला कर्मचारियों के जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा स्वीकृत होती है।

पुरूष एवं महिला कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि मापनी से प्राप्त माध्य, मानक विचलन तथा टी–मूल्य का प्रर्दशन

तालिका सं0–2

क्र0 सं0	नाम	पुरूश कर्मचारी			महिला कर्मचारी			टी मूल्य	.01 एवं .05 विश्वास स्तर
		सं0	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि		
1	नागरिक पुलिस विभाग	50	144	17.12	50	142	19.39	.54	सार्थक अन्तर नहीं है
2	पी0ए0सी0	50	152	15.66	50	149	15.22	.962	सार्थक अन्तर नहीं है

परिणाम तालिका सं0 2 में प्रदर्शित किये गये हैं

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य .54 ज्ञात हुआ प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि .01 एवं .05 विश्वास स्तर पर पुरूष एवं महिला कर्मचारियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना सं0 2 नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत पुरूष तथा महिला कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होगा अस्वीकृत की जाती है।

तालिका सं0 2 की क्रम सं0 2 को देखने से पता चलता है कि पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य .962 आया।

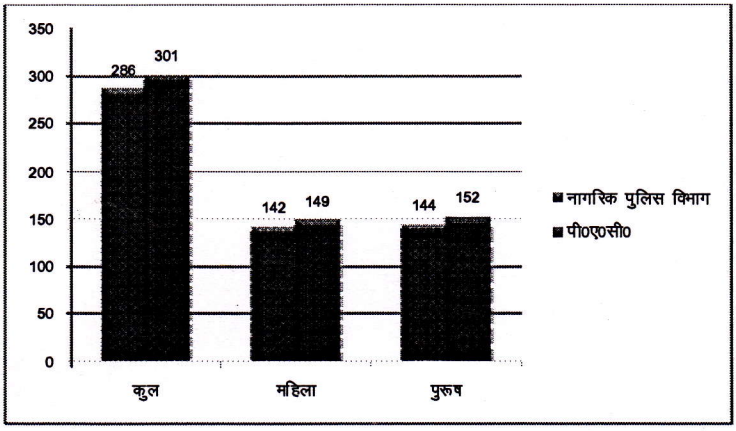

परिणाम यह दर्शाते हैं कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अतः परिकल्पना कि पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों में सार्थक अन्तर होगा अस्वीकृत की जाती है।

`विवचेना–

प्रत्येक व्यक्ति में व्यैक्तिक भिन्नताएं पाई जाती हैं एक ही व्यवसाय में कार्यरत होने पर भी दो पुरूष या दो स्त्रियों में वैयक्तिकता पायी जाती है।

यह वैयक्तिकता उनके व्यक्तित्व के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकती है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएं क्षमताएं रूचि, अभिरूचि, जीवन सन्तुष्टि आदि भिन्न–2 होते हैं जो कि उनके अनेक वातावरणीय, सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित हाती हैं। अतः इन्हीं वातावरण परिस्थिति आयु, लिंग इत्यादि

के कारण भी व्यक्ति के जीवन सन्तुष्टि के प्रतिमानों में अन्तर की कल्पना की जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन में दो पुलिस विभाग, नागरिक पुलिस एवं पी0ए0सी0 के दो वर्गों महिला एवं पुरूष के मध्य जीवन सन्तुष्टि के अन्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया है कि क्या आयु, वर्ग, लिंग एवं व्यवसाय में अन्तर होने के कारण दो वर्गों की जीवन–सन्तुष्टि में भी अन्तर पाया जाता है।

तालिका संख्या–1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 के मध्य सार्थक अन्तर होता है। सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग के कर्मचारियों का मध्यमान 286 है तथा सम्पूर्ण पी0ए0सी0 के कर्मचारियों का मध्यमान 301 है, दोनों ही विभागों में जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की है। इसी प्रकार नागरिक पुलिस विभाग के पुरूष कर्मचारी का मध्यमान प्राप्तांक 144 तथा मानक विचलन 17.12 है तथा तथा पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों का मध्यमान प्राप्तांक 149 तथा मानक विचलन 15.22 है। अतः स्पष्ट है कि दोनों के मध्य .01 एवं .05 विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर है दोनों विभागों के पुरूष कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की है। यहां यह ज्ञात होता है जीवन सन्तुष्टि के स्तर पर विभागों का अन्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तालिका संख्या–1 के क्रम संख्या–3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत महिला कर्मचारियों का मध्यमान प्राप्तांक 142 तथा मानक विचलन 19.75 है तथा पी0ए0सी0 में कार्यरत महिला कर्मचारियों का है जो कि यह दर्शाता है कि दोनों विभागों को महिला कर्मचारियों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया तथा दोनों विभागों की महिला कर्मचारियों में प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि जीवन सन्तुष्टि का स्तर पर विभागों में अन्तर का प्रभाव देखने को मिलता है। समान लिंग के कर्मचारियों के भिन्न विभाग होने पर जीवन सन्तुष्टि में भी अन्तर आया।

इसी प्रकार तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समान विभाग में लिंग के अन्तर नहीं पड़ता। नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत मानक विचलन 17.12 है तथा महिला कर्मचारियों है जो कि यह दर्शाता है कि लिंग में अन्तर होने पर भी जीवन सन्तुष्टि के स्तर पर कोई प्रभाव एवं महिला कर्मचारियों के मध्य कोई सार्थक की जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की पाई गयी तथा तालिका संख्या–2 की क्रम संख्या –2 से स्पष्ट है कि पी0ए0सी0 में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों का मध्यमान प्राप्तांक 152 तथा मानक विचलन 15–66 है तथा महिला कर्मचारियों का मध्यमान है। दोनों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि पी0.ए0सी0 के पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं

पाया गया तथा दोनों वर्गों की जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की पाई गयी। यहां भी समान विभाग होने पर लिंग में अन्तर से जीवन सन्तुष्टि के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अतः यहां परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पना संख्या 1 एवं 4 स्वीकृत होती है तथा परिकल्पना संख्या 2, 3 एवं 5 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग एवं पी0ए0सी0 में कार्यरत कर्मचारियों की जीवन सन्तुष्टि उच्च स्तर की पाई गई। वातावरण लिंग, आयु, विभाग, आदि में भिन्नता होने पर भी जीवन सन्तुष्टि के स्तर में कोई विभाग देखने को नहीं मिला। प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएं क्षमताएं, रूचि, अभिरूचि जीवन सन्तुष्टि आदि भिन्न–भिन्न होते हैं। जो कि उनके अनेक वातावरणीय, सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित होती हैं। परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में जीवन सन्तुष्टि के प्रतिमानों पर वातावरण, शारीरिक, सामाजिक कारण पड़ा। जीवन सन्तुष्टि का स्तर उच्च पाया गया तथा विभाग, आयु, लिंग आदि में अन्तर होने पर भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ सूची

- *"Ardelt M. (2003) Effect of religion and purpose of life in elder's subjective in well – being. Journal of Religious Gerontology 14 Page 55 – 77.*
- *Studies of life satisfaction by Google from Internet.*
- *श्रीवास्तव डी0एन0, वर्मा प्रीति, असामान्य मनोविज्ञान।*
- *श्रीवास्तव डी0एन0, वर्मा प्रीति, आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।*
- *श्रीवास्तव डी0एन0, वर्मा प्रीति, मनोविज्ञान, षिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी।*
- *राय हाकिम, अपराध, अपराध निरोध एवं पुलिस प्रक्रिया भाग–2।*
- *राय हाकिम, अपराध निरोध तष्तीय संस्करण।*
- *पी0टी0सी0 9 बटालियन, मुरादाबाद 100 नागरिक पुलिस विभाग कर्मचारियों का साक्षात्कार।*
- *पी0टी0सी0 9 बटालियन, मुरादाबाद 100 पी0ए0सी0 कर्मचारियों का साक्षात्कार।*